मलेशिया के लिए प्रस्थान करने से पहले प्रधानमंत्री का वक्तव्य

दिनांक 11 दिसम्बर, 2005
नई दिल्ली

मैं चौथे *भारत-आसियान* शिखर सम्मेलन तथा प्रथम पूर्व-एशिया शिखर सम्मेलन जो 13-14 दिसम्बर, 2005 को होगा, में भाग लेने के लिए आज मलेशिया जा रहा हूं।

भारत-आसियान शिखर सम्मेलन, *आसियान* देशों के साथ हमारे संबंधों में हुई प्रगति की समीक्षा करने तथा सहयोग की नई पहलों जिन्हें हम संयुक्त रूप से शुरू कर सकते हैं, पर विचार करने का एक सुअवसर है। *आसियान* तथा इसके प्रत्येक सदस्य देश के साथ वर्षों से हमारे संबंध तेजी के साथ तथा संतोषजनक ढंग से आगे बढ़ रहे हैं। सन् 2002 से जब हमने अपनी वार्षिक शिखर वार्ता शुरू की थी, इन संबंधों में गुणात्मक रूप से नया आयाम जुड़ा है। हम *आसियान* के साथ अपने संबंधों को बहुत महत्व देते हैं जो भारत की ''पूर्वोन्मुख'' नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रथम पूर्व-एशिया शिखर सम्मेलन एक ऐतिहासिक घटना होगी। इसमें पहली बार ऐसे देशों के नेता शामिल हो रहे हैं जिन्होंने इस क्षेत्र को सम्पूर्ण विश्व अर्थ-व्यवस्था के लिए विकास का एक इंजन बनाया है। यह उस प्रक्रिया की शुरूआत है जो उन देशों को एकजुट करती है जो एक-दूसरे के ज्यादा करीब आ रहे हैं तथा जिनकी परस्पर-निर्भरता बढ़ती जा रही है। हम अपेक्षा करते हैं कि यह शिखर सम्मेलन एक सामूहिक दीर्घकालिक दृष्टिकोण तय करेगा ताकि क्षेत्रीय स्वरूप को निखारा जा सके और सामुदायिक-निर्माण को बढ़ावा दिया जा सके।

मलेशिया में, मैं *आसियान* व्यापार सलाहकार परिषद द्वारा आयोजित नेताओं की विशेष वार्ता को भी संबोधित करूंगा तथा प्रमुख स्थानीय व्यावसायियों से बातचीत करूंगा। मलेशिया में भारतीय मूल के लोगों की एक बहुत बड़ी आबादी रहती है और मैं उनसे तथा प्रवासी भारतीय समुदाय से मिलूंगा।

अपने प्रवास के दौरान, मुझे उस समय कुआलालम्पुर में पधारे अन्य देशों के नेताओं से भी मिलने का अवसर मिलेगा। मैं अपने मेजबान देश तथा अन्य उपस्थित नेताओं के साथ द्विपक्षीय चर्चा करूंगा तथा अपने द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा करूंगा।